पद १७२ (राग: देस - ताल: त्रिताल)

मंजुळ भाषणें मोहनियां मज। निघूनि गेले तेणें वसे मनिं खटका

गे। विरहानळें जीव व्याकुळ होउनि। उठवेना देह झालासे मुटका

गे।।२।। माणिक प्रभुलागी त्यजिन मी प्राणा। आण सखे वाट्रनि

लागलासे चुटका गे करूं कैसें। क्षण एक न गमे या हरीविण।।ध्रु.।।

विष घुटका गे।।३।।

